NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.H.D.-5

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Shanti Swaroop Gupt*, M.A., Ph.D.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Content

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-4
Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-5
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-4

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. साहित्य की अवधारणा 1
2. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय 20
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : आचार्य एवं उनके सिद्धान्त 50
4. प्रमुख साहित्य, सिद्धान्त और मतवाद 107
5. समालोचना 137
6. हिन्दी आलोचना 164
7. साहित्य की विधाएँ या काव्य-रूप 176

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

M.H.D.-5

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खंड से* ***दो-दो*** *प्रश्नों के उत्तर देना* ***अनिवार्य*** *है। शेष* ***एक*** *प्रश्न का उत्तर किसी भी खण्ड से दिया जा सकता है। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-क

प्रश्न 1. रसनिष्पत्ति की परिभाषा निरूपित करते हुए, शंकुक के अनुमितिवाद एवं भट्टनायक के भोगवाद पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-22, प्रश्न 3

प्रश्न 2. कुन्तक के वक्रोक्ति सूत्र की स्पष्ट व्याख्या करते हुए वक्रोक्ति के विभिन्न भेदों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-36, प्रश्न 11, पृष्ठ-37, प्रश्न 12

प्रश्न 3. ध्वनि-सिद्धांत संबंधी आचार्य मतों की व्याख्या करते हुए ध्वनि-काव्य के भेदों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-39, प्रश्न 13, पृष्ठ-40, प्रश्न 14

प्रश्न 4. शब्द-शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके विभिन्न भेदों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-16, प्रश्न 11, पृष्ठ-17, प्रश्न 12, पृष्ठ-18, प्रश्न 13

प्रश्न 5. हिन्दी के आधुनिक विद्वानों की काव्य-प्रयोजन संबंधी मान्यताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-15, प्रश्न 10

खण्ड-ख

प्रश्न 6. मैथ्यू आर्नल्ड की काव्य संबंधी मान्यताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-88, प्रश्न 17

प्रश्न 7. कॉलरिज के कल्पना सिद्धांत की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-86, प्रश्न 16

प्रश्न 8. ड्राइडन की व्यावहारिक समीक्षा के सूत्र एवं तुलनात्मकता पर अपना मन्तव्य प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–ड्राइडन की आलोचना की एक महत्त्वपूर्ण तकनीक है **तुलना**। वे एक तरह के साहित्यिक मूल्यों को हमेशा दूसरी तरह के साहित्यिक मूल्यों के संदर्भ में रखकर देखते हैं। लेखकों के अलावा वे विधाओं (नाटक और महाकाव्य), काव्य-शक्तियों (प्रतिभा के विभिन्न पक्षों–जैसे उद्भावना, कल्पना और विवेक), काव्य के उद्देश्य (शिक्षा और आनंद) और साहित्यिक इतिहास के विभिन्न युगों की तुलना करते हैं। लेखकों में बेन जॉनसन और शेक्सपियर की तुलना अधिक प्रसिद्ध है : "बेन जॉनसन जितना विद्वान् और विवेकपूर्ण लेखक किसी भी नाट्य परंपरा में मिलना मुश्किल है। ..... यदि उनकी तुलना शेक्सपियर से की जाए, तो यह मानना पड़ेगा कि उसमें परिशुद्धता की मात्रा अधिक थी। किंतु शेक्सपियर की प्रतिभा बड़ी थी। शेक्सपियर नाट्य कवियों के होमर या जनक थे, जबकि जॉनसन वर्जिल। जॉनसन के प्रति मेरे मन में सराहना का भाव है, जबकि शेक्सपियर को मैं प्यार करता हूँ।" ड्राइडन ने शेक्सपियर और फ्लेचर की विस्तार से तुलना की है। ड्राइडन का बल विश्लेषण पर रहता है, जिससे दोनों रचनाकारों की मूल संवेदना को समझने में मदद मिलती है।

विधाओं की तुलना के अंतर्गत हम नाटक और महाकाव्य की तुलना को ले सकते हैं। ड्राइडन के अनुसार इन दोनों विधाओं में सापेक्षिक दृष्टि से महाकाव्य अधिक महत्त्वपूर्ण है। महाकाव्य के अंगों से ही नाटक के शरीर का निर्माण हुआ है। अरस्तू ने त्रासदी के नियम मूलत: '*इलियद*' और '*ओदिसी*' से ही ग्रहण किए थे, फिर उन्हीं नियमों को उसने नाटक पर लागू कर दिया। महाकाव्य पर नाटक की इस निर्भरता को देखते हुए ही ड्राइडन ने त्रासदी की अपेक्षा महाकाव्य को अधिक महत्त्वपूर्ण माना, किंतु अरस्तू ने त्रासदी को अधिक महत्त्वपूर्ण माना था। अत: विस्तृत तुलना जरूरी हो उठी : "त्रासदी मानव-जीवन का लघु रूप है, महाकाव्य उसका विस्तृत प्रारूप है। महाकाव्य में विशेष त्वरा नहीं रहती, उसमें घटनाओं की गति मंद-मंथर रहती है। जो परिवर्तन आते हैं, वे धीर-धीरे, किंतु उसमें उपचार अधिक पूर्ण होता है। त्रासदी का प्रभाव इतना उग्र होता है कि वह स्थायी नहीं हो सकता।..... महाकाव्य का संबंध हमारे आचरण से है, नाटक का मनोवेगों से। दोनों तरह की कविताओं का अपना-अपना महत्त्व है।"

NEERAJ PUBLICATIONS

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

M.H.D.-5

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड से* ***दो-दो*** *प्रश्नों के उत्तर देना* ***अनिवार्य*** *है। शेष* ***एक*** *प्रश्न का उत्तर किसी भी खण्ड से दिया जा सकता है। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-क

प्रश्न 1. विभिन्न भारतीय और पश्चिमी आचार्यों के काव्य-प्रयोजन संबंधी मतों का निरूपण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-11, प्रश्न 8, पृष्ठ-12, प्रश्न 9, पृष्ठ-15, प्रश्न 10

प्रश्न 2. 'रस' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए रस चिन्तन की परंपरा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-20, प्रश्न 1, पृष्ठ-22, प्रश्न 3

प्रश्न 3. भारतीय काव्यशास्त्र में 'सहृदय' की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–सहृदय शब्द का अर्थ है–समान हृदय वाला। कवि, कलाकार मूर्तिकार या शिल्पी के हृदय में जो विशिष्ट भाव रहते हैं, उसको वही अनुभव कर सकता है, जो उसी प्रकार की अनुभूति सम्पन्न हृदय रखता हो। रचनाकार के हृदय में जो व्याकुलता होती है, उसे रूप देने का प्रयत्न ही कला है, उसके लिए कवि या कलाकार को साधना की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार की व्याकुलता कवि या कलाकार के चित्त में होगी, उसी प्रकार की व्याकुलता उसकी कृति या रचना सहृदय के हृदय में उत्पन्न कर सकती है, उससे ज्यादा नहीं, इसलिए यदि कवि या कलाकार समाधिनिष्ठ हो सकता है तो बदले में सहृदय को भी समाधिनिष्ठ कर सकता है। यदि वह शिथिल समाधि है, तो सहृदय की भी समाधि शिथिल होगी।

समाधि का अर्थ है–इन्द्रियों का बाहरी विषयों से निवृत्त होकर अन्तर्मुखी होना। भारतीय आचार्यों के अनुसार जब तक कवि के चित्त में स्वयं रसानुभूति नहीं होती, तब तक वह सहृदय को भी रस का बोध नहीं करवा सकता। कवि या रचनाकार अन्तरतम की रसानुभूति को रूप देता है और सहृदय उस रूप का बाह्य प्रत्यक्ष करके अन्तर्मुखी होता है।

काव्य के प्रसंग में रस लोकोत्तर अनुभूति है, ऐसा सभी आचार्यों का कहना है। इसका अर्थ यह है कि लोक में जो लौकिक अनुभूति होती है, उससे भिन्न कोटि की यह अनुभूति है। प्रत्यक्ष जीवन में राम और सीता का प्रेम है वह लौकिक है, परन्तु नाटक या काव्यस्वादन से जो सीता और राम हमारे चित्त में बनते हैं, वे उससे भिन्न हैं।

वस्तुतः सामाजिक या सहृदय के हृदय में संस्काररूप में सूक्ष्मतया स्थिति रति आदि स्थायी भाव होते हैं। जिनके हृदय में ये संस्काररूप में सूक्ष्मतया स्थिति रति आदि स्थायी भाव होते हैं और जिनके हृदय में ये संस्कार जितने जागरूक होते हैं, वे उतना ही अधिक रसास्वादन कर सकते हैं। वासना रूप से स्थित स्थायी भाव भी उन्हीं सामाजिकों में सम्यक अभिव्यक्त होता है, जिन्होंने लौकिक जीवन में ललना, उद्यान तथा कटाक्ष आदि के द्वारा रति आदि की बार-बार अनुभूति की है और उसमें निपुणता प्राप्त करती है अर्थात् जो रसिक है, विरक्त नहीं हो गए हैं। इस प्रकार सहृदय सामाजिकों में ही इत्यादि भाव की अभिव्यक्ति हुआ करती है और सहृदयता के लिए सहज संस्कार आवश्यक है। इसीलिए आचार्यों ने सहृदय को 'सवासन' कहा है अर्थात् 'सकल सहृदय संवाद भाजा' समस्त सहृदयों की समान अनुभूति का विषय।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार सहृदय पहले बाह्य रूप को प्रत्यक्ष करता है और फिर धीरे-धीरे सूक्ष्म से सूक्ष्मतर तत्त्व की ओर जाता है।

उदाहरणार्थ, लोक में 'घट' शब्द का अर्थ है, मिट्टी का बना हुआ पात्र विशेष। किन्तु यह घड़ा स्थूल होता है। यदि हम शब्द का उच्चारण मन-ही-मन करें तो 'घड़ा' पद और 'घड़ा' पदार्थ सूक्ष्म रूप में चित्त में आ जाते हैं। इस प्रकार जो मानस मूर्ति तैयार होती है, वह सूक्ष्म कही जाती है। इस प्रकार स्थूल जगत के सिवा एक सूक्ष्म जगत की मानसमूर्ति रचने की सामर्थ्य मनुष्य मात्र में है, इसे ही भाव जगत कहते हैं। लोक में जो घड़ा है वह स्थूल जगत का अर्थ है। मानस अर्थ भाव जगत का अर्थ है। 'घर' नामक पद का यह अर्थ सूक्ष्म है और लोक में प्रचलित स्थूल अर्थ से यह भिन्न है।

प्रश्न 4. ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाओं पर विचार कीजिए।

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

साहित्य की अवधारणा

काव्य लक्षण

प्रश्न 1. संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य लक्षण पर विचार कीजिए।

उत्तर संस्कृत साहित्य में कवि को मनीषी, परिभू:, स्वयम्भू:, दृष्टा और ऋषि तथा कवि-कर्म को काव्य कहा गया है। काव्य उस विशिष्ट प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति की रचना है, जो रमणीय शैली में अपने भावों को प्रकट करता है और अपनी रचना से सहृदय पाठकों को लोकोत्तर आनन्द प्रदान करता है। काव्य भारतीय वाङ्मय का एक व्यापक शब्द है जिसके अन्तर्गत समस्त सृजनात्मक साहित्य नाटक, गद्य साहित्य, पद्य, काव्य, चम्पू आदि अन्तर्भूत हैं। परन्तु विश्व में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का आरम्भ काव्य के रूप में हुआ। आदि कवि वाल्मीकि, होमर आदि की वाणी कविता के रूप में ही प्रस्फुटित हुई, अत: काव्य लक्षण से तात्पर्य है कविता की विशिष्टताएं, उसका स्वरूप विवेचन, उसकी परिभाषा। काव्य लक्षण में निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिएँ :

1. उसमें अतिव्याप्ति दोष नहीं होना चाहिए, अर्थात् विषय का अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
2. उसमें अव्याप्ति दोष भी नहीं होना चाहिए अर्थात् उसमें काव्य की सभी विशेषताएं बतानी चाहिए, कोई विशेषता छूटनी नहीं चाहिए।
3. वह सारगर्भित, संक्षिप्त, सूत्रबद्ध तथा अर्थवान होना चाहिए।
4. उसमें कोई पारिभाषिक शब्द नहीं होना चाहिए, जिसे समझने में कठिनाई हो।
5. लक्षण तार्किक, स्पष्ट और सहज बोधगभ्य होना चाहिए।

संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य-लक्षण प्रस्तुत करने की परम्परा प्रारंभ से ही मिलती है।

सर्वप्रथम भारत के आदि आचार्य भरत मुनि ने नाटक पर आधारित काव्य-लक्षण प्रस्तुत किये मृदु ललित पदावली, गूढ़ शब्दार्थहीनता, सर्वसुगमता, युक्तिमत्ता, रस प्रवाहित करने की क्षमता।

भामह इनके अनुसार शब्द और अर्थ का सहित-भाव काव्य कहलाता है *शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।* इनका यह लक्षण केवल काव्य पर घटित नहीं होता, प्रत्येक प्रकार के सार्थक कथन पर लोकवार्ता और शास्त्र-कथन पर भी घटित होता है।

दण्डी इनके अनुसार, *इष्ट अर्थ से परिपूर्ण पदावली काव्य का शरीर है। शरीरं सावद् इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।* 'इष्ट अर्थ' से उनका तात्पर्य अलंकारजन्य आह्लाद माना जा सकता है। दण्डी का उक्त कथन '*काव्य-शरीर*' का स्वरूप प्रस्तुत करता है, न कि काव्य का। इसमें एक दोष तो यह है कि काव्य का शरीर पदावली नहीं है, अपितु शब्द (वाचक) और अर्थ (वाच्य) दोनों का समन्वित रूप है।

वामन *काव्य उस शब्दार्थ को कहते हैं, जो दोषरहित हो तथा जिसमें गुण नित्य रूप से और अलंकार अनित्य रूप से विद्यमान हों, और इसकी आत्मा है रीति।*

आनन्दवर्धन *काव्य उस शब्दार्थ-रूप शरीर को कहते हैं, जिसकी आत्मा ध्वनि (व्यंग्यार्थ) है।* यद्यपि यह लक्षण काव्य के आन्तरिक तत्त्व ध्वनि की ओर सर्वप्रथम संकेत करता है, किन्तु स्वयं '*ध्वनि*' शब्द अत्यन्त व्याख्यापेक्ष है।

कुन्तक *परस्पर-सम्बद्ध शब्द और अर्थ काव्य कहलाते हैं, जो कवि के वक्रव्यापार (वक्रोक्ति-युक्त कथनविशेष) से युक्त तथा सहृदयजनों के आह्लादक बन्ध में रचे गये हैं।* इस काव्य-लक्षण में '*वक्रोक्ति*' पर बल दिया गया है, जो कि एक परिभाषिक शब्द होने के कारण सुगम नहीं है।

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मम्मट मम्मट-प्रस्तुत काव्य लक्षण है *"तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि"* अर्थात्, *दोषरहित और गुण तथा अलंकार-सहित शब्दार्थ का नाम काव्य है। कहीं-कहीं अलंकार के स्फुट न होने पर भी दोषरहित और गुणसहित शब्दार्थ को काव्य कहा जाता है।* निष्कर्षतः, उनके अनुसार काव्य में निर्दोषता और सगुणता अनिवार्य तत्त्व हैं और स्फुट सालंकारता वैकल्पिक तत्त्व।

'अदोषौ' विशेषण के सम्बन्ध में प्रमुख आपत्ति यह है कि सर्वत्र नितान्त निर्दोष काव्य की परिकल्पना असम्भव है।

'सगुणौ' विशेषण के सम्बन्ध में विश्वनाथ की दो आपत्तियाँ हैं (1) यदि '*सगुणौ शब्दार्थौ*' से मम्मट का तात्पर्य है कि शब्द और अर्थ रस के व्यंजक (प्रकट करने वाले) हों, तो उन्हें स्पष्टतः '*सरसौ*' कहना चाहिए था। (2) यदि '*सगुणौ शब्दार्थौ*' से उनका तात्पर्य है कि शब्द और अर्थ ऐसे हों जो रसानुकूल गुणों के कोमल अथवा कठोर वर्णों के व्यंजक हों, तो यह स्थिति काव्य के स्वरूप का निर्धारण नहीं करती, अपितु उसकी उत्कृष्टता द्योतित करती है।

'अनलंकृती पुनः क्वापि' विशेषण के सम्बन्ध में भी विश्वनाथ का कहना है कि अलंकार भी काव्य के स्वरूप का निर्धारक नहीं है, अपितु उसका उत्कर्षक है।

इस परिभाषा में न रस का संकेत है, न ध्वनि का, न वक्रोक्ति का, केवल गुण का संकेत है।

विश्वनाथ विश्वनाथ-प्रस्तुत काव्य-लक्षण है '*वाक्यं रसात्मकं काव्यम्*', अर्थात् *ऐसा वाक्य जिसकी आत्मा रस है, काव्य कहलाता है।* यहाँ रस से आशय है रस, भाव, रसाभास, भावाभास, भावोदय, भावसन्धि, भावसबलता और भावशान्ति। यह सत्य है कि काव्य का बहुभाग इन आठ तत्त्वों में समाविष्ट हो सकता है, फिर भी, काव्य का पर्याप्त भाग ऐसा बचा रहता है, जो रस की शास्त्रीय परिधि में समाविष्ट नहीं हो पाता। अतः यह लक्षण अव्याप्ति दोष से दूषित है। इसमें दूसरा दोष यह है कि '*रस*' शब्द भी रीति, ध्वनि '*वक्रोक्ति*' आदि के समान व्याख्या की अपेक्षा रखता है। तीसरा दोष यह है कि रसात्मक '*वाक्य*' अर्थात् पद-समूह को काव्य कहना उचित नहीं है, क्योंकि रसात्मकता की स्थिति '*पद-समूह*' में नहीं हो सकती, शब्दार्थ में, अर्थात् वाचक और वाच्य के समन्वित रूप में ही हो सकती है।

जगन्नाथ इनके द्वारा प्रस्तुत काव्य-लक्षण है '*रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्*' अर्थात् *वह शब्द जो रमणीयता का प्रतिपादक है काव्य कहलाता है।* '*रमणीयता*' शब्द, न केवल रस का (जो कि अपनी शास्त्रीय परिधि में सीमित है) वाचक है, अपितु काव्य के किसी भी तत्त्व ध्वनि, गुणीभूत-व्यंग्य, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति से प्राप्त आनन्द, लोकोत्तर आह्लाद, चमत्कार, आदि सबका वाचक है। इस प्रकार '*रमणीयता*' शब्द '*रस*' की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक है। इसके अतिरिक्त यह रस के समान पारिभाषिक भी नहीं है, अतः व्याख्यापेक्ष भी नहीं है। फिर भी, इस लक्षण में एक दोष है काव्य में रमणीयता (चमत्कार, आह्लाद, आनन्द, रस) का प्रतिपादक केवल शब्द नहीं हो सकता, अपितु शब्द (वाचक) और अर्थ (वाच्य) का समन्वित रूप ही हो सकता है। अतः यदि उक्त लक्षण को निम्न संशोधित रूप में प्रस्तुत करें, तो यह कहीं अधिक ग्राह्य एवं आदर्श बन सकता है '*रमणीयताप्रतिपादकौ शब्दार्थौ काव्यम्*' अर्थात् रमणीयता का प्रतिपादक शब्द और अर्थ का समन्वित रूप काव्य कहलाता है।

चमत्कारी आह्लाद से पूर्ण रमणीय अर्थों के प्रतिपादक शब्द ही काव्य हैं। इसमें एक दोष यह भी है कि काव्य में सर्वत्र रसानुभूति ही नहीं होती, अन्य अनुभूतियां भी आह्लाद प्रदान करती हैं, जिनसे कभी बौद्धिक आनन्द, तो कभी कल्पनात्मक आनन्द प्राप्त होता है।

प्रश्न 2. पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित काव्य-लक्षण पर विचार कीजिए।

उत्तर पाश्चात्य काव्यशास्त्र द्वारा प्रस्तुत काव्य के लक्षणों को हम सामान्यतः दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं वे जो वस्तुपरक हैं और जिनमें काव्य के बाह्य पक्ष पर अधिक बल दिया गया है, तथा वे जो काव्य के आत्म-तत्त्व पर बल देते हैं। पहले वर्ग में प्लैटो, अरस्तू, ड्राइडन, जॉनसन, कार्लाइल, मैथ्यू ऑर्नल्ड प्रभृति द्वारा प्रस्तुत लक्षण आते हैं, तो दूसरे वर्ग में रोमांटिक काव्य-धारा के कवि-आलोचक और मनोवैज्ञानिक आलोचना-पद्धति के विद्वान् आते हैं, जैसे वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, शैली, ले हन्ट, एलन पो आदि। पाश्चात्य काव्यशास्त्र का आरंभ प्लैटो (427-347 ई.पू.) से होता है।

प्लैटो प्रमुखतः दार्शनिक, राजनीतिज्ञ और समाज-सुधारक थे, अतः उन्होंने काव्य को सौन्दर्यशास्त्र या काव्यशास्त्र की दृष्टि से न देखकर दार्शनिक और समाज-सुधारक की दृष्टि से देखा है। उनका मत है कि भौतिक पदार्थ स्वयं ही सत्य (Idea) की अनुकृति है, फिर काव्य तो इन भौतिक पदार्थों की भी अनुकृति होता है, अतः वह अनुकरण का अनुकरण होने के कारण त्याज्य है। प्लैटो की धारणा है कि वह ऐसे भावों का संपोषण करता है, जो त्याज्य और हेय हैं। उनकी परिभाषा काव्यशास्त्र की दृष्टि से नहीं लिखी गयी है, केवल कविता को आदर्श राज्य से बहिष्कृत करने के उद्देश्य से उन्होंने उसकी व्याख्या की है।

अरस्तू ने सर्वप्रथम काव्यशास्त्रीय दृष्टि से कविता की परिभाषा के सम्बन्ध में कुछ संकेत-सूत्र दिए।

"*Poetry is an imitation of nature through the medium of language.*"

अर्थात् काव्य भाषा के माध्यम से प्रकृति का अनुकरण है। इस परिभाषा में दो शब्द प्रकृति और अनुकरण व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं। प्रकृति से अरस्तू का अभिप्राय बाह्य जड़-जगत् (पर्वत,

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

नदी, पशु-पक्षी आदि) तथा अन्तर्जगत् (मानव-भावना, काम, क्रोध आदि) दोनों से है। इसी प्रकार '*अनुकरण*' का अर्थ हू-बहू नकल करना नहीं था।

वह कवि के अनुकरण को भावनामय मानते थे और स्वीकार करते थे कि कवि अपनी संवेदना, अनुभूति, कल्पना, आदर्श आदि का प्रयोग करके अपूर्ण को पूर्ण बनाता है।

इसलिए अरस्तू के '*अनुकरण*' का अर्थ है मूल का पुनरुत्पादन, जीवन का कलात्मक और भावात्मक पुनः सृजन। अरस्तू की परिभाषा को और अधिक स्पष्ट शब्दों में रखना चाहें, तो कह सकते हैं, "*कविता जीवन और जगत् का कल्पनात्मक पुनः सृजन है।*"

अरस्तू का काव्य-लक्षण अपने आप में अस्पष्ट और अर्ध-व्यक्त (under expressed) है। प्रथम तो अनुकरण शब्द से सृजन अर्थ प्रकट नहीं होता। दूसरे, जैसा डॉ॰ नगेन्द्र ने कहा है प्रकृति और अनुकरण दोनों ही शब्द वस्तु-तत्त्व के महत्त्व की ओर संकेत करते हैं, उसी पर बल देते हैं। अनुकरण का अर्थ पुनः सृजन कर लेने पर भी वस्तु का महत्त्व बना रहता है। यह परिभाषा भाव पक्ष या अनुभूति पक्ष के प्रति उदासीन है।

पुनर्जागरण-काल के बाद आचार्य ड्राइडन ने काव्य की दो परिभाषाएँ दीं। प्रथम में उन्होंने कहा, "*Poetry is articulate music*" अर्थात् कविता स्पष्ट संगीत है। इस परिभाषा में कविता के बाह्य पक्ष के भी केवल एक अंग संगीत-तत्त्व पर बल दिया गया है। संगीत तो कविता का एक पक्ष है और बिना संगीत के भी काव्य लिखा गया है। अतः यह परिभाषा नितान्त अनुपयुक्त है। उनकी दूसरी परिभाषा है "*Poetry is an imitation of nature by pathetic and numerous speech.*"

यह परिभाषा भी मौलिक न होकर अरस्तू की परिभाषा पर ही आधारित है। ड्राइडन की दोनों परिभाषाओं में कविता के बाह्य पक्ष पर ही बल दिया गया है, उसके आत्म-तत्त्व की ओर इन परिभाषाओं में ध्यान नहीं दिया गया है।

डॉ॰ जॉनसन की कविता की परिभाषा, "*Poetry is a metrical composition*" अर्थात् कविता छन्दमयी वाणी है-कविता का लक्षण न बताकर पद्य (verse) का लक्षण बताती है। कविता का प्राणत्त्व तो भाव है, जिसकी ओर इस परिभाषा में कोई ध्यान नहीं दिया गया है। डॉ. जानसन की दूसरी परिभाषा है "*Poetry is the art of uniting pleasure with truth by calling imagination to the help of reason.*"

अर्थात् कविता वह कला है, जो कल्पना की सहायता से विवेक द्वारा सत्य और आनन्द का संयोजन करती है। इस परिभाषा में काव्य के सभी तत्त्वों सत्य, आनन्द, कल्पना, विवेक को एक-साथ मिलाकर रख दिया गया है। इस परिभाषा से काव्य का स्वरूप स्पष्ट नहीं हो पाता है। वह काव्य के व्यावर्तक धर्म को स्पष्ट नहीं करती। दूसरे, इस परिभाषा में भी कविता के कलात्मक पक्ष पर ही अधिक बल दिया गया है।

कार्लाइल की कविता की परिभाषा है-"*Poetry, we call musical thought.*"

अर्थात् काव्य संगीतपूर्ण विचार को कहते हैं। इसमें यद्यपि बुद्धि-तत्त्व और संगीत-तत्त्व को ध्यान में रखा गया है, पर काव्य के अन्य तत्त्वों भाव, कल्पना आदि की उपेक्षा की गई है।

काव्य-लक्षण में वस्तु पर बल देने वालों में सबसे विख्यात हैं मैथ्यू आर्नल्ड। उनकी काव्य-परिभाषा है "*Poetry is the criticism of life under the condition fixed for such a criticism of life by laws of poetic truth and poetic beauty.*"

अर्थात् काव्य-सत्य तथा काव्य-सौन्दर्य के सिद्धान्तों द्वारा निर्धारित उपबन्धों के अधीन जीवन की समीक्षा का नाम काव्य है। यह परिभाषा लेखक के निजी आदर्श की द्योतक है और जीवन की समीक्षा तथा विचार-तत्त्व पर बल देती है। इस परिभाषा का इस दृष्टि से तो महत्त्व है कि वह काव्य के प्रति कल्याणवादी दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देती है, पर इसमें राग-तत्त्व की ओर कोई संकेत नहीं होता। शास्त्रीय दृष्टि से भी इस परिभाषा का कोई महत्त्व नहीं है, क्योंकि यह सर्वथा अस्पष्ट और उलझी हुई है। इसके निम्नलिखित दोष हैं :

1. इसमें काव्य को, जिसकी स्थिति साध्य की है, साधन बना दिया गया है।
2. इस परिभाषा का '*समीक्षा*' शब्द अतिव्याप्ति दोष से दूषित है, क्योंकि जीवन की समीक्षा को ही यदि काव्य माना जाएगा, तो फिर शास्त्र और दर्शन भी काव्य के अन्तर्गत आ जाएंगे, क्योंकि उनमें भी जीवन की समीक्षा होती है, उनमें भी लेखक जीवन के अनुभवों को ग्रहण करके उन पर अपने ढंग से विचार करता है।
3. यह लक्षण व्याख्याधीन है, क्योंकि काव्य-सत्य तथा सौन्दर्य दोनों को समझना आवश्यक हैं।
4. सामान्यतः लक्षण में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग अवांछनीय है। ऑर्नल्ड की इस परिभाषा में यही हुआ है। इसमें काव्य का लक्षण देते समय उन्होंने काव्य-सत्य और काव्य-सौन्दर्य दो पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है, जो काव्य से अधिक सूक्ष्मतर तत्त्व हैं और जिनका अर्थ है क्रमशः कल्पना-तत्त्व और राग-तत्त्व।

सारांश यह है कि इस परिभाषा में अव्याप्ति, अतिव्याप्ति, अस्पष्टता आदि कई दोष हैं।

मिल्टन ने अपने '*Eassy on Education*' में कविता की परिभाषा देते हुए लिखा है कविता सरल तथा रागात्मक होनी

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

चाहिए। इस लक्षण में कविता के तत्त्वों की ओर निर्देश न होकर उसके गुणों की ओर संकेत है, अतः इसे वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता।

दूसरा वर्ग उन विद्वानों का है, जिन्होंने अपने लक्षणों में काव्य के भाव-तत्त्व पर बल दिया है। इनमें रोमांटिक-काल के कवि-आलोचक वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, शैली आदि हैं। अतः उन्होंने कविता की परिभाषा उसके निर्माण की प्रक्रिया तथा कवि के व्यक्तित्व के आधार पर की; वह वस्तुपरक न होकर व्यक्तिपरक है।

अंग्रेजी में रोमांटिक-युग के प्रवर्त्तक वर्ड्सवर्थ ने काव्य की परिभाषा दी है-"*Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings. It takes its origin from emotions recollected in tranquility.*"

अर्थात् कविता शान्ति के क्षणों में स्मरण किये हुए प्रबल मनोवेगों का सहज उच्छलन है। यह परिभाषा अत्यन्त प्रभावशाली है, परन्तु इसमें निम्नलिखित दोष हैं :

1. प्रथम तो प्रश्न उठता है कि क्या शान्ति के क्षणों में स्मृत सभी मनोवेग, जैसा कि इस लक्षण में मान लिया गया है, काव्य हो जाते हैं। स्पष्ट है कि सभी मनोवेग काव्य नहीं हो सकते। मनोवेगों के अनुभूति और भाव बन जाने पर ही और कवि द्वारा भावोद्रेक प्रकट करने पर ही काव्य-सृष्टि होती है। कविता भाव का पुनः स्मरण नहीं, पुनः सृजन है। इस परिभाषा में अभिव्यंजना-तत्त्व की उपेक्षा है।
2. प्रबल मनोवेगों का सहज उच्छलन कभी कविता नहीं बन सकता, क्योंकि दुःख के क्षणों के आँसू, कम्प, विलाप आदि तथा सुख के क्षणों में उल्लास आदि भावों का सहज उच्छलन तो होता है, पर वह कविता नहीं है। अतः यह परिभाषा अतिव्याप्ति के दोष से आक्रांत है।
3. परिभाषा में '*Recollected*' शब्द स्पष्ट नहीं है।

इन सब दोषों के होते हुए भी इस परिभाषा का महत्त्व है, क्योंकि इसमें कवियों की काव्याभिव्यक्ति की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है। यह ठीक है कि मनोवेगों के आवेग के समय काव्य की अभिव्यक्ति नहीं होती, वरन् जब मनोवेग अनुभूति एवं भाव बन जाते हैं, तब कवि की वाणी काव्य बन जाती है।

अंग्रेजी के मूर्धन्य आलोचक और कवि कॉलरिज ने काव्य की परिभाषा दी है "*Best words in best order.*"

अर्थात् उत्तम शब्दों के उत्तम रचना-विन्यास को कविता कहते हैं। यह परिभाषा भी अस्पष्ट है। इस कथन में कविता को केवल उक्तिरूप कहा गया है, उसके भाव रूप और आत्मा की उपेक्षा की गई है। यह लक्षण व्याख्या-सापेक्ष भी है, क्योंकि उत्तम शब्दों तथा उत्तम क्रम को समझे बिना लक्षण स्पष्ट नहीं होगा।

कॉलरिज की दूसरी परिभाषा है-"*It (Poetry) is the excitement of emotion for the purpose of immediate pleasure through the medium of beauty.*"

यह परिभाषा निश्चय ही पूर्ण एवं स्पष्ट लक्षण प्रस्तुत करती है और कविता के लक्ष्य की ओर भी संकेत करती है।

पी.बी. शैली के अनुसार, '*काव्य कल्पना की अभिव्यक्ति है*।' इस परिभाषा में भाव-पक्ष की उपेक्षा है, क्योंकि कल्पना तो भावों को संवेद्य बनाने का माध्यम है। कल्पनामयी उक्तियाँ, जिनमें भाव या अनुभूति न हो, प्रहेलिका या चित्र-काव्य बन सकती है, काव्य नहीं। अतः यह लक्षण उपयुक्त नहीं है।

शैली की दूसरी परिभाषा है-"*Poetry is the record of the best and the happiest moments of the happiest and the best minds.*"

अर्थात् कविता सर्वसुखी और सर्वोत्तम मनों के सर्वोत्तम और सर्वसुखपूर्ण क्षणों का लेखा है। इस लक्षण में पहली शंका तो यह उठती है कि सबसे सुखी और सबसे उत्तम मन कौन है और उसे कैसे पहचाना जायेगा?

19वीं शताब्दी के अन्त में ले हन्ट ने कहा था "*Poetry is imaginative passion.*" अर्थात् कल्पनात्मक मनोवेग का नाम कविता है। यदि इस परिभाषा से उनका अभिप्राय यह है कि कल्पना के द्वारा मनोवेग की अभिव्यक्ति कविता है, तो यह लक्षण पर्याप्त उपयुक्त है। पर यदि उनका अभिप्राय है कि कल्पना द्वारा भाव के संस्कार को उद्बुद्ध करना ही कविता है, तो यह लक्षण अपूर्ण एवं अपर्याप्त है, क्योंकि भाव के संस्कार को उद्बुद्ध करना तो काव्य का प्रथम अवस्थान है। जब तक बाह्य उपकरणों द्वारा उसकी अभिव्यक्ति नहीं होगी, तब तक वह काव्य नहीं बन पाएगा। उनकी दूसरी परिभाषा अधिक जटिल तथा अस्पष्ट है।

कविता सौन्दर्य, शक्ति और सत्य के लिए कहा गया भाववेगपूर्ण कथन है जिनमें कल्पनामय चित्रण और भाषा में एकता में विविधता के सामंजस्य की विशेषता का समावेश हो। कविता में उत्कट वासना का ही कथन नहीं होता, तटस्थ रूप से सौन्दर्य और सत्य का वर्णन होता है। भाषा के सम्बन्ध में तो यह लक्षण अत्यन्त जटिल और अस्पष्ट है। सारांश यह है कि कविता की अनेक विशेषताओं को प्रकट करती हुई भी यह परिभाषा पूर्ण और आदर्श नहीं कही जा सकती। वह गीतिकाव्य की परिभाषा अधिक प्रतीत होती है, कविता की कम।

सौन्दर्यवादी कवि एडगर ऐलन पो ने कविता की परिभाषा देते हुए कहा है "*I would define in brief the poetry of words as the rhythmical creation of beauty.*"

अर्थात् काव्य-सौन्दर्य की लयपूर्ण सृष्टि है। इस परिभाषा में लय का अर्थ स्पष्ट नहीं है। लय शब्द बहुत व्यापक है। प्रत्येक

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

कला में लय होती है, संगीत और नृत्य भी सौन्दर्य की लयपूर्ण सृष्टि है। भाषा शब्द का प्रयोग न होने के कारण यह लक्षण अतिव्याप्ति के दोष से ग्रसित हो उठा है।

कविता के सम्बन्ध में नये सिरे से विचार करने वाले पाश्चात्य विद्वानों में आई.ए. रिचर्ड्स तथा टी.एस. इलियट उल्लेखनीय हैं।

आई.ए. रिचर्ड्स ने माना कि काव्य अनुभूति है, जीवनानुभूति है। रिचर्ड्स केवल अनुभूति को कविता मानते हैं। '*कविता अनुभूतियों का एक ऐसा वर्ग है जो मानक अनुभूति से, प्रत्येक विशेषता में भिन्न होती हुई भी, किसी विशेषता में एक खास मात्रा में भिन्न नहीं होती।*' रिचर्ड्स की इस परिभाषा को विद्वानों ने दुरूह-जटिल-अस्पष्ट कहा है।

टी.एस. इलियट ने काव्य-चिंतन में '*एण्टी-रोमाण्टिक*' रवैया अपनाते हुए घोषित तौर पर कहा कि रचनाकार जितना ही उत्कृष्ट होगा, उसमें भोक्ता और स्रष्टा का अंतर उतना ही स्पष्ट होगा। उन्होंने कला को निर्वैयक्तिक घोषित किया और कवि-मानस को काव्य-रचना का माध्यम मात्र बताया। वह काव्य को कवि-व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं मानते, भावों की तीव्रता को महत्त्व नहीं देते, काव्य-शिल्प की कलात्मकता पर बल देते हैं। साथ ही वह यह स्वीकार करते हैं कि प्रौढ़ कवि वह होता है, जो अपने व्यक्तिगत और उत्कट अनुभवों के माध्यम से सामान्य सत्य को व्यक्त करता है। अत: वह शिल्प और अनुभूति दोनों का महत्त्व मानते हैं तथा भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण सिद्धान्त को भी स्वीकार करते हैं कवि अपने निजी भावों को इस प्रकार वाणी देता है कि वे भाव सर्व-सामान्य के भाव बन जाते हैं, उसके अनुभव निजी होते हुए भी सबके अनुभव बन जाते हैं।

प्रश्न 3. काव्य के स्वरूप, संरचना तथा कवि-कर्म के विषय में हिन्दी विद्वानों के विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर समय गतिशील है। परिवर्तन जीवन का नियम है। एक युग के बाद दूसरा युग आता है। पुरातनता की निर्मोक प्रकृति एक पल भी नहीं सहती। युग की स्थितियाँ, परिवेश, परिस्थितियां जीवन-पद्धति का प्रभाव सर्जक साहित्यकार के हृदय-मस्तिष्क पर पड़ता है अत: उसके कवि-कर्म में भी बदलाव आता है, कविता के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तित होता है और साहित्य की रचनाओं में आये परिवर्तन को देखकर आचार्य-आलोचक भी अपनी धारणाएं, साहित्य के मानदंड, कविता के प्रतिमान बदलते हैं। जैसे-जैसे जीवन जटिल होता रहा है, काव्य में भी जटिलता बढ़ती गयी है और इस जटिलता के कारण काव्यानुभूति जटिल होती गयी है और इस जटिलता का असर कवि-कर्म तथा कविता के प्रतिमानों पर भी पड़ा है। कर्म रस को काव्य की आत्मा कहा जाता था, स्वच्छन्तावादी कविता को आत्माभिव्यक्ति मानते थे परन्तु भाषा, रस, ध्वनि, भाव, का महत्त्व बहुत कम हो गया है। कविता को आत्माभिव्यक्ति न मानकर निर्वैयक्तिक शब्द-व्यापार माना जा रहा है, "*काव्य भाव का स्वच्छन्द प्रवाह नहीं, भाव से मुक्ति या पलायन है। वह व्यक्तित्व की आत्माभिव्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व से मुक्ति है।*" अब कविता को शाब्दिक निर्मित कहा जाता है।

हिन्दी काव्यशास्त्र का आरंभ द्विवेदी-युग से होता है। आदि काल और भक्ति काल में काव्य के स्वरूप, संरचना आदि पर विधिवत् विचार नहीं हुआ। तुलसीदास के कतिपय कथनों जैसे, *सहज कवित करित विमल सोइ भरपाई सुजान या कीरति मनित भूति मल सोई सुरसाई सम सब कर हित होई* में केवल काव्य-लक्षण और काव्य-प्रयोजन के संकेत हैं। रीतिकालीन कवियों ने स्वयं को आचार्य भले ही कहा हो, रीति-ग्रन्थ या लक्षण-ग्रन्थ भले ही लिखे हों, पर उन्होंने स्वतंत्र चिन्तन नहीं किया है, उनकी रचनाएं संस्कृत काव्यशास्त्र की नकल मात्र हैं। मम्मट, विश्वनाथ आदि की उक्तियों का रूपान्तर है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के लेखों तथा '*रसज्ञ रंजन*' नामक पुस्तक में कविता के सम्बन्ध में कुछ विचार व्यक्त किये हैं। उन्होंने कविता को समाज तथा सामाजिकता से जोड़ा। उनका विचार है कि कविता की भाषा बोलचाल की भाषा होनी चाहिए, गद्य और पद्य की भाषा एक होनी चाहिए। कविता को सादा, प्रत्ययमूलक और रागयुक्त होना चाहिए, कवि को यथार्थ का सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिए, कल्पना का प्रयोग भी होना चाहिए।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पहले हिन्दी के विद्वान् हैं जिन्होंने कविता के सम्बन्ध में मौलिक, गंभीर एवं सुचिन्तित विचार व्यक्त किये हैं। वह एक ओर संस्कृत काव्यशास्त्र के ज्ञाता थे तथा दूसरी ओर पश्चिम के विद्वानों मैथ्यू ऑर्नल्ड, क्रोचे के विचारों से भी परिचित थे। कविता के सम्बन्ध में उनके विचार हैं जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्तावस्था के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावायोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं। आचार्य शुक्ल के रसवादी प्रतिमान '*कविता क्या है*' में सक्रिय रहे, पर '*रसदशा*' बड़ी चीज बन गई। अपने हृदय को लोक-हृदय में मिला देना ही '*रसदशा*' है। अर्थात् '*रसदशा*' व्यापक अर्थ में '*हृदय की मुक्तावस्था*' ही है। आचार्य शुक्ल ने काव्य लक्षणों की परंपरागत शब्दावली का अनुसरण करते हुए कविता को '*शब्द-विधान*' माना।

हिन्दी के छायावादी कवियों ने काव्य लक्षणों पर नए ढंग से विचार किया। **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** ने स्वच्छंदतावादियों के ढंग पर काव्य की परिभाषा दी कि कविता विमल हृदय का उच्छवास है-'*तुम विमल हृदय उच्छवास और मैं कान्तकामिनी कविता।*' '*काव्य अभिव्यक्ति है*' यह धारणा प्रसाद, पन्त और

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com